ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

के मानविकी संकाय की हिन्दी विषयक

पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध प्रारूप

प्रस्तावित विषय :

"तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध"

शोध-निर्देशक :

डॉ. मीनाक्षी राना

सहायक प्राध्यापक

हिंदी विभाग, सी० एम० कॉलेज,

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,

दरभंगा

शोधार्थी :

रूबी कुमारी

एम० ए० हिंदी

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,

दिल्ली

जे० आर० एफ०

भूमिका:-

मानव-समाज की रचना का आधार स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध है। उनके आपसी सहयोग, सहभाव, स्नेह व प्रेम से समाज का विकास होता हैं। इसलिए साहित्य जो समाज से गहरे रूप में प्रभावित होता रहा है उसमें स्त्री-पुरुष विमर्श का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

आदिकाल से स्त्री-पुरुष में परस्पर आकर्षण एवं प्रेम-भाव न केवल समाज को ही बल्कि साहित्य-जगत को भी प्रभावित करता रहा है। साहित्य में वर्णित स्त्री-पुरुष सम्बन्ध यथार्थ एवं कहानीकार की कल्पना की उपज भी होती है। प्राचीन ग्रंथो में स्त्री-पुरुष संबंधों से संबंधित अनेक कथाएँ और कथा-साहित्य में भी देखने को मिल जाती है। हिंदी कथा-साहित्य में भी स्त्री-पुरुष संबंध का प्रतिपादन कई स्तरों पर किया गया है। मुख्य तौर पर देख सकते हैं सामाजिक, पारिवारिक और मानवीय स्तर। प्रख्यात लेखक **राजेंद्र यादव** अपनी लेखन में स्त्री-पुरुष के संबंधों की जटिलता को पारिवारिक स्तर पर रेखांकित करते है। उन्होंने अपने लेखन में प्रेम, करुणा, दया आदि समस्त मानवीय भावों को दिखाने का प्रयत्न किया है। **मैत्रेयी पुष्पा** के उपन्यासों में भी स्त्री-पुरुष के रिश्तों में द्वंद्व देखने को मिलता है। उनकी रचना में ग्रामीण पृष्ठभूमि को आधार बना कर सामाजिक दृष्टिकोण से स्त्री-पुरुष के संबंधों को दिखाया गया है। **प्रभा खेतान** की कई रचना स्त्री-पुरुष के संबंधों को रेखांकित करती हैं। **कृष्णा सोबती** के कथा-साहित्य में ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों को केन्द्रित कर स्त्री-पुरुष के संबंधों को दर्शाया गया है। **उषा प्रियंवदा** के कथा-साहित्य की पृष्ठभूमि मध्यवर्गीय एवं ग्रामीण से विदेश तक की है। उनकी रचनाओं में स्त्री-पुरुष के संबंधों में नगरीय परिवेश दिखाई

पड़ते हैं। **मन्नू भंडारी** के कथा-साहित्य में भी आधुनिकता के परिपेक्ष्य में स्त्री-पुरुष के मंबंधों का विवेचन हुआ है।

तेजेंद्र शर्मा आधुनिक युग के महत्वपूर्ण प्रवासी लेखक हैं। इनकी कहानियों में वर्तमान समय का परिवेश दिखाई पड़ता हैं। इनकी कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंधों के अनेक स्तरों को सूक्ष्मता और प्राथमिकता के साथ अभिव्यक्त किया गया है। तेजेंद्र शर्मा की रचनाएं आधुनिक सामाजिक जीवन के यथार्थ को सामने लाने का कार्य कर रही हैं। 'कल फिर आना' कहानी रीमा पर केन्द्रित है। रीमा की जिंदगी अजनबीपन से गुजर रही है। तेरह साल पहले उनकी जिंदगी में खुशियां, प्यार और रोमांस सब कुछ था। तेरह साल बाद उनकी जिंदगी रिश्तों के खोखलेपन से जूझ रही है। कहानी के जो पात्र हैं, उनके द्वारा तेजेंद्र शर्मा पाठकों को आधुनिक सामाजिक जीवन को दिखाने का प्रयत्न कर रहे हैं की एक खूबसूरत रिश्ता भी वक्त के साथ कैसे नीरस हो जाता हैं।

'भंवर' तेजेंद्र शर्मा की बेहतरीन कहानियों में से एक है। इस कहानी के पात्र स्मिता और भरत है, जो खुशहाल जिंदगी जी रहे है मगर रीमा के आने के बाद भरत रीमा की ओर आकर्षित हो जाता है, ना चाहते हुए भी भरत अपनी पत्नी और बच्चों के साथ विश्वासघात कर बैठता है।

'धुंधली सुबह' स्त्री-पुरुष के सामान्य से वैवाहिक जीवन में प्रेम और प्रेरणा को लेकर पैदा हुए द्वंद्व पर केन्द्रित है।

'अभिशप्त', 'कोख का किराया' जिसमें ब्रिटेन की भूमि पर बसे भारतीय मूल के जीवन को दर्शाया गया है। 'कोख का किराया' कहानी में मैनी अपनी पसंदीदा व्यक्ति के

साथ वक्त बिताने के लिए अपने पति और बच्चों से दूर हो जाती है।वो अपने सपनों को हकीक़त में जीने के लिए भूल जाती है कि उसका अपना एक परिवार भी है।उसे ख्याल भी नही आता की उसका पति उससे कितना प्यार करता है, अपने ख्वाहिशों के लिए अपने परिवार को भी पीछे छोड़ देती है।तेजेंद्र शर्मा इस कहानी में स्त्री के मनोभावों को दिखाने में सफल रहे हैं।तेजेंद्र शर्मा महिला पात्रों के मानसिक दश।ओं को समझने में परिपक्व है।एक पुरुष होकर महिला पात्रों के मनोभावों को स्वाभाविकता से प्रस्तुत करना उनकी एक उपलब्धि है।उनकी रचनाएं आधुनिक समाज के परिवेश को सम्पूर्णता में दिखाती है।**हरियश राय** के शब्दों में "तेजेंद्र शर्मा अपनी कहानियों में अपने समय के परिवेश को सघनता से व्यक्त करते हैं।इनकी कहानियों में फैले परिवेश का विस्तार देशी और विदेशी पृष्ठभूमि पर आधारित है।"वस्तुत:तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में परिवेशगत भिन्नता आधुनिक समाज एवं उनकी जटिलता और स्त्री–पुरुष के समबन्धों में बदलते मूल्यों का चित्रण दिखता है।

• शोध की आवश्यकता:

तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में स्त्री–पुरुष के संबंधो में प्रेम, करुणा एवं द्वंद्व स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।उनकी कहानियां इस तथ्य को इंगित करती हैं कि आधुनिक समाज में रिश्ते की अहमियत क्या है।बदलते दौर का प्रभाव भी उनकी कहानियों में दिखता है।तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ ऐसे परिवारों को प्रस्तुत करती हैं, जो स्पष्ट तौर पर खुशहाल एवं साधन संपन्न है परंतु चेतना के स्तर पर जड़ीभूत हो चुके हैं।मूलत: तेजेंद्र शर्मा ने जड़ीभूत चेतना को स्त्री पुरुष के संबंधों के

माध्यम से अपनी रचनाओं में गतिशीलता प्रदान करने का प्रयास किया है।

तेजेंद्र शर्मा के अधिकांश कहानियों में ब्रिटेन में रहने वाले भारतीय मूल के व्यक्तियों एवं परिवारों के जीवन से सम्बंधित कथाओं को प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में वह वर्तमान सामाजिक यथार्थ के पक्षधर साहित्यकार है। उनकी सभी कहानी प्रवासी जीवन के यथार्थ से जुड़ी हुई है। वे ब्रिटेन में बसे लोगों की ही नहीं बल्कि भारतीय परिवेश में रह रहे लोगों के जीवन की चुनौतियों को भी लिख रहे हैं। उन्होंने रिश्तों के द्वंद्व में उलझे उन बेबस शोषित लोगों की कहानियाँ भी लिखी हैं जो अपने रिश्तों से तंग आकर तीसरे रास्ते का चुनाव करते हैं|

तेजेंद्र शर्मा की कहानियां स्त्री-पुरुष रिश्तों को आधुनिक समाज के संदर्भ में परिभाषित करती है। उनकी रचनाओं में **अभिशप्त**, **श्वेतश्याम** ,**धुंधली सुबह** ,**एक मुट्ठी धूप** ,**सिलवटें**, **ग्रीन कार्ड**, **क्रमशः** ,**भंवर** इत्यादि हैं, जिनमें स्त्री-पुरुष संबंधों की विविधता दिखाई पड़ती हैं। उनकी कहानियों में रिश्तों का खोखलापन, अजनबीपन एवं बेबस इंसान जो सामाजिक, पारिवारिक एवं मानसिक अंतर्द्वंद्व से घिरा हुआ है की परिस्थितियों का चित्रण प्राप्त होता है। इसी कारण तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध पर अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

• शोध का महत्व :

प्रवासी साहित्य में तेजेन्द्र शर्मा आधुनिक परिदृश्य की रचना करने वाले साहित्यकार है।इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से बुनियादी सामाजिक-राजनीतिक एवम भावनात्मक रिश्तों का बोध कराया है।**जयशंकर प्रसाद,मैत्रेयी पुष्पा,राजेंद्र यादव,मन्नू भंडारी,उषा प्रियंवदा,कृष्णा सोबती** इत्यादि ने भी स्त्री-पुरुषों से संबंधित महत्वपूर्ण रचनाएं रची है।

तेजेन्द्र शर्मा की रचनाएं आधुनिक युग से संबंध रखती हैं।वर्तमान परिवेश उनकी कहानियों में झलकता है।उन्होंने जिस यथार्थ जीवन के रिश्तों का चित्रण किया है,उनमें जीवन की पीड़ा का यथार्थ रूप से चित्रित किया गया है।तेजेंद्र शर्मा एक ऐसे अनुभवी कथाकार हैं,जिनमें रिश्तों की संवेदनशीलता एवम भावनात्मक की अनंत गहरी समझ देखने को मिलती है।उनकी रचनाओं के पात्रों में परिवेशगत एवम विविधता है।पात्र योजना की दृष्टि से संबंधित सभी पात्रों का प्रभावी चित्रण हुआ है।जो रिश्तों के भंवर में फंसे लोगों की मानसिकता को दिखाता है।विदेशी परिवेश के संदर्भ में कथाकार द्वारा वहां के सामाजिक जीवन एवम रिश्तों में द्वंद्व दिखाने का प्रयत्न किया गया हैं।

तेजेंद्र शर्मा की कथा- भाषा सरल,सहज और व्यावहारिक जन-भाषा है।उनकी ग्चनाओं में चलते-फिरते डायलॉग,साफ-सुथरे शब्दों का प्रयोग हुआ है,जो अत्यंत ही प्रभावशाली है।उनकी कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंधों को बेहद बारीकी से प्रस्तुत किया गया है।इन संबंधों

पर आर्थिक और सामाजिक हालात किस तरह हावी हो जाते हैं इनका चित्रण उन्होंने कलात्मक ढंग से अपनी कहानियों में किया है। विदेशी परिवेश में भारतीय जीवन मूल्यों के साथ जीना चुनौतीपूर्ण कार्य है। उनकी कहानियों में बयां दर्द, पाठक में सुहानुभूति पैदा कर देता है। वे समस्याओं से जूझते पात्रों की मानसिक स्थिति को बेहद सटीक ढंग से अपनी कहानियों में अभिव्यक्त करते हैं। **कृष्णा सोबती** का कहना है "तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों से गुज़रते हुए हम यह शिद्दत से महसूस करते हैं कि लेखक अपने वजूद का टेक्स्ट होता है। उसके पात्र ज़िंदगी की मुश्किलों से गुज़रते हैं और अपने लिए नया रास्ता तलाश करते हैं...वह बाहरी दुनिया की कहानी लिखते हैं जिसमें चरित्र होते हैं और डायलॉग का खूबसूरत प्रयोग किया जाता है।"

तेजेंद्र शर्मा एक ऐसे साहित्यकार है, जो खामोशी से अपना रचना कार्य करते है। तेजेंद्र शर्मा की विशेषता है कि वह एक ही विषय पर भी विविध भाव-संवेदना से संपृक्त दो तीन कहानी लिख सकते हैं, जैसे कैंसर पर आधारित मार्मिक कहानी '**कैंसर**' और हाल में ही प्रकाशित चर्चित कहानी '**मौत एक मध्यांतर**' जिनमें विषय कैंसर होते हुए भी दोनों कहानी एक दूसरे से भिन्न हैं। तेंजेंद्र शर्मा की कहानियों में रिश्तों के नाम पर होने वाली औपचारिकता का दिखावा भी दिखाया गया है।

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में अभिव्यक्त स्त्री-पुरुष के संबंधों एवम उनके रिश्तों के ताने-बाने को सूक्ष्मता से समझना और स्त्री पुरुष संबंध के प्रत्येक पहलू को केंद्रित करके शोध करना आवश्यक है। यह शोध की दृष्टि से तेजेन्द्र शर्मा

की कहानियों का यह पहलू अछूता रहा है, इस दृष्टिकोण से यह शोध महत्वपूर्ण हो जाता है।

• पूर्वकृत शोध सूची :

तेजेन्द्र शर्मा आधुनिक युग के प्रसिद्ध प्रवासी लेखक है। वर्तमान समय में मेरी दृष्टि से प्रस्तावित शोध विषय पर शोध कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है। प्रस्तावित विषय **"तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध"** शोध कार्य हेतु सवर्था नवीन और मौलिक प्रस्ताव है।

प्रस्तावित शोध पर पूर्व में हुए शोध कार्य का विवरण :-

1. कमला नरवारिया -प्रवासी जीवन के संदर्भ में तेजेंद्र शर्मा के कथा साहित्य का कथ्य एवं शिल्प।

   जीवाजी यूनिवर्सिटी 2021

2. परविंदर सिंह- हिंदी और पंजाबी प्रवासी कहानी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन तेजेंद्र शर्मा और हरजीत अटवाल के विशेष संबंध में।

   पंजाब यूनिवर्सिटी 2021

• आधार ग्रंथ सूची :

1. शर्मा तेजेंद्र, काला सागर, वाणी प्रकाशन, 1990
2. शर्मा तेजेंद्र , ढिबरी टाइट, वाणी प्रकाशन, 1999
3. शर्मा तेजेंद्र, देह की कीमत, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2007
4. शर्मा तेजेंद्र, बेघर आंखें, यश पब्लिकेशंस, 2007
5. शर्मा तेजेंद्र,यह क्या हो गया,डायमंड पॉकिट बुक्स,नौवां संस्करण, 2003
6. शर्मा तेजेंद्र, सपने मरते नहीं, शिवना प्रकाशन, 2024
7. शर्मा तेजेंद्र, कब्र का मुनाफा, सामायिक प्रकाशन,नई दिल्ली, 2011
8. शर्मा तेजेंद्र, मौत का मध्यांतर, यश पब्लिकेशन, 2018
9. शर्मा तेजेंद्र,दीवार में रास्ता, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,पन्द्रहवां संस्करण, 2012
10. शर्मा तेजेंद्र,स्मृतियों के घेरे में समग्र कहानी भाग-एक,यश पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स,दिल्ली,प्रथम संस्करण, 2011
11. शर्मा तेजेंद्र,प्रिय कथाएं,ज्योतिपर्व प्रकाशन,गाज़ियाबाद,चौदहवा संस्करण
12. शर्मा तेजेंद्र,प्रतिनिधि कहानियां,किताबघर प्रकाशन,नई दिल्ली,तेरहवां संस्करण, 2014

• शोध की परिकल्पना :

वर्तमान समय की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंधों के अनेक स्तरों को सूक्ष्मता और प्राथमिकता के साथ अभिव्यक्त किया गया है। भूमंडलीकरण के युग में पहले की अपेक्षा स्त्री और पुरुष को सामाजिक रूप में एक दूसरे के बहुत निकट आने का अवसर प्राप्त हुआ है। वर्तमान में स्त्री–पुरुष के स्वतंत्र जीवन और प्रेम संबंधों को अधिक ठोस तथा व्यावहारिक धरातल प्राप्त हुआ है। ज्ञान विज्ञान के प्रसार एवं संपर्क साधनों की सुगमता ने भी स्त्री–पुरुष संबंधों के संदर्भ में समाज की परिस्थितियों को परिवर्तित किया है| इस युग की कहानीकारों के द्वारा यौन अनुभवों को भी पूरी सहजता से उन्हें बिना अश्लील बनाए अपनी रचनाओं का विषय बनाया गया है। आज की नारी बेचारी बेबस नहीं रह गई है। वह किसी भी प्रकार की संघर्ष स्थिति का सामना करने में सक्षम हो गयी है।

तेजेंद्र शर्मा अपनी कहानी में रिश्ते के बदलते दौर को दिखाने में कामयाब रहे है। उनकी रचनाओं आधुनिक सामाजिक जीवन के यथार्थ को सामने लाने का काम किया है। लेखक द्वारा अपनी कहानियों में सामाजिक परिदृश्य की तस्वीर ही नहीं दिखाई गयी है, बल्कि उसके प्रति पुर्नचिंतन के लिए भी प्रेरित किया हैं| आधुनिक सामाजिक जीवन को दिखाने का लेखक का उद्देश्य है- आज के दौर में बदलते रिश्ते एवं रिश्तों में बढ़ता खोखलापन, अजनबीपन, मानसिक तनाव एवं द्वंद्व से जूझती जिंदगी को बेबाकी से अभिव्यक्त करना। उनकी रचनाओं में आधुनिक समाज में स्त्री–पुरुष के परस्पर जटिल होते संबंधों को समझने के लिए किन-

किन तथ्यों का होना जरूरी है,उन तथ्यों को शोध में रेखांकित करने का प्रयास किया जाएगा।

• शोध की प्रविधि :-

प्रस्तावित शोध विषय-"**तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध**"की प्रविधि विवरणात्मक होगी जिसमे आगमन और निगमन विधियों का उपयोग संभव है। आगमन विधि से शोध से संबंधित सभी तथ्यों का संकलन किया जा सकेगा। निगमन विधि से प्रस्तावित अनुसंधान विषय के संभावित निष्कर्ष का विश्लेषण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त इस शोध में प्रश्नावली और साक्षात्कार विधि का भी प्रयोग किया जा सकेगा। तथा यथावसर विषय विशेषज्ञ से परामर्श प्राप्त कर शोध निष्कर्ष को अधिकाधिक प्रामाणिकता एवं उपयोगिता प्रदान करने का प्रयत्न किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध –प्रारूप निम्न अध्यायों में विभाजित होगा :-

भूमिका

प्रथम अध्याय :- तेजेंद्र शर्मा का व्यक्तित्व एवम कर्तृत्व

द्वितीय अध्याय :- स्त्री–पुरुष संबंध भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि

तृतीय अध्याय :- तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में स्त्री एवं पुरुष

चतुर्थ अध्याय :- स्त्री–पुरुष सम्बन्ध में सम की तलाश

पंचम अध्याय :- प्रवासी स्त्री–पुरुष के बदलते मूल्यों का विश्लेषण

उपसंहार

परिशिष्ट

• संदर्भ ग्रंथों की सूची :

1. शर्मा बृजनारायण और भटनागर हरि, शर्मा तेजेंद्र ,वक्त के आईने में,रचना समय, भोपाल, प्रथम संस्करण, 2009

2.पॉल नीना,हिंदी की वैश्विक कहानियां सन्दर्भ तेजेंद्र शर्मा का रचना संसार,अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012

3. कुमारी,डॉक्टर कमलेश,प्रवासी कथाकार तेजेंद्र शर्मा मुद्दे और चुनौतियां,साहित्य संचय सोनिया विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2018

4. अरोड़ा मधु,बाते,तेजेंद्र शर्मा के साक्षात्कार,शिवना प्रकाशन,सीहोर,प्रथम संस्करण, 2012

5. गंभीर डॉक्टर सुरेंद्र,प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानी,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली,प्रथम संस्करण, 2017

6. गोयनका डॉ० कमलकिशोर,प्रवासी साहित्य जोहांसबर्ग से आगे,विदेश मंत्रालय,भारत सरकार,साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली, संस्करण, 2019

7. भट्टनागर हरि और शर्मा तेजेंद्र, समुंदर पार रचना संसार सन्दर्भ प्रवासी भारतीय हिंदी कहानियां, रचना समय प्रकाशन,भोपाल, प्रथम संस्करण, 2008

8. सिंह नामवर, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां लोग,भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 2009

9. सक्सेना,उषा राजे,।ब्रेटेन में हिंदी कहानी, मेघा बुक्स, दिल्ली, 2006

10. जोशी अनिल ,प्रवासी लेखन नयी ज़मीन नया आकाश,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली,प्रथम संस्करण, 2018

11. कुमार जैनेन्द्र,कहानी:अनुभव और शिल्प,पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली,प्रथम संस्करण, 1973

12. कुमार जैनेन्द्र, जैनेन्द्र की कहानियां,पूर्वोदय प्रकाशन,दिल्ली,प्रथम संस्करण, 1953

13. आर्या सुषमा,नावरिया अजय,प्रवासी हिन्दी कहानी एक अंतर्यात्रा ,शिल्पायन प्रकाशन , दिल्ली 2013

14. संधु मधु ,हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी कथा लेखन, वामन प्रकाशन , दिल्ली , 2013

15. श्रीधर,प्रो० प्रदीप,तेजेंद्र शर्मा का रचना संसार,विनय प्रकाशन ,कानपुर,प्रथम प्रकाशन 2018

शोध निर्देशक :

Meenakshi

डॉ० मीनाक्षी राना
सहायक प्राध्यापक
सी०एम०कॉलेज -हिन्दी-विभाग
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर,दरभंगा

शोधार्थी:

रूबी कुमारी

रूबी कुमारी
एम०ए० हिन्दी
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,दिल्ली
जे०आर०एफ०
पैट क्रमांक-

शोध सारांश :

स्त्री-पुरुष संबंध सामाजिक एवं संस्कृति दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। तेजेंद्र शर्मा आधुनिक यु; के प्रवासी लेखक है, इनकी रचनाओं में आधुनिक परिवेश देखने को मिलता है। भारत की पृष्ठभूमि के साथ ही यूरोप की पृष्ठभूमि एवं वहाँ की सामाजिक संस्कृति भी उनकी कहानियों के परिदृश्य में झलकती है।

तेजेन्द्र शर्मा के लेखन में स्त्री-पुरुष के संबंधों में प्रेम, करुणा एवं द्वंद्व स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है, इनकी रचनाओं में यूरोप में बसे भारतीय मूल की जिंदगी की चुनौतियां,उनके जीवन की जटिल समस्याओं एवं रिश्तों में बढ़ते तनाव एवं पीड़ा और द्वंद्व को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई।

तेजेन्द्र शर्मा ने अपनी रचनाओं में स्त्री-पुरुष के संबंधों के बदलते आयाम, रिश्तों के बोझ में दबे इंसान की बेबसी, आधुनिक समाज में स्त्री-पुरुष के संबंधों के अंतर्द्वंद्व को बेबाकी से प्रस्तुत किया है।

शोध निर्देशक :

डॉ० मीनाक्षी राना
सहायक प्राध्यापक
सी०एम० कालेज -हिन्दी-विभाग
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर,दरभंगा

शोधार्थी:

रूबी कुमारी

रूबी कुमारी
एम०ए० हिन्दी
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,दिल्ली
जे०आर०एफ०
पैट क्रमांक-

सहमति-पत्र

प्रमाणित किया जाता है की श्रीमती **रूबी कुमारी** , स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा को प्रस्तावित शोध – प्रारूप **" तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में स्त्री – पुरुष सम्बन्ध "** विषय पर शोध निर्देशन देना मुझे स्वीकार है। मेरी जानकारी में इस विषय पर शोध-कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है।

मै इनके उज्जवल भविष्य की मंगलकामना करती हूँ।

भवदीय

सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
सी० एम० कॉलेज, दरभंगा
ल० ना० मि० वि०, दरभंगा

डॉ० मीनाक्षी राना
शोध निर्देशक
सी० एम० कॉलेज,हिंदी विभाग
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा